Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

जयसमंद झील : परंपरा की रक्षा बनाम आधुनिकता की चुनौती : एक अध्ययन

मोनिका आमेटा* डॉ. पंकज आमेटा**

* शोधार्थी (इतिहास) भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत
** शोध निर्देशक (इतिहास) भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – जयसमंद झील, जिसे एशिया की सबसे बड़ी कृत्रिम मीठे पानी की झील माना जाता है, न केवल मेवाड़ की जलवायु और कृषि व्यवस्था की धुरी रही है, बल्कि इसकी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत का भी प्रतीक रही है। यह अध्ययन जयसमंद झील के पारंपरिक महत्व और वर्तमान में उस पर पड़ रही आधुनिक प्रभावों की चुनौतियों की समीक्षा करता है। विगत कुछ दशकों में पर्यटन, नगरीकरण, जल प्रबंधन तकनीकों और स्थानीय जनसंख्या की बदलती आवश्यकताओं ने झील की पारिस्थितिकी, सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना और आर्थिक उपयोग को प्रभावित किया है। परंपरागत जल संरक्षण प्रणालियाँ, धार्मिक अनुष्ठान, स्थानीय लोककथाएँ और जीवनशैली अब आधुनिक विकास के दबाव में कमजोर होती जा रही हैं। दूसरी ओर, आधुनिकता ने रोजगार, कनेक्टिविटी और पर्यटन को बढ़ावा भी दिया है। यह अध्ययन विभिन्न स्रोतों, क्षेत्रीय सर्वेक्षण, जनसाक्षात्कार और तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से यह समझने का प्रयास करता है कि किस प्रकार परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित कर झील की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखा जा सकता है। निष्कर्षत:, शोध यह प्रस्तावित करता है कि यदि स्थानीय समुदाय, प्रशासन और विशेषज्ञ मिलकर नीति–निर्माण करें, तो जयसमंद झील को एक 'सांस्कृतिक रूप से सतत विकास मॉडल' में परिवर्तित किया जा सकता है।

शब्द कुंजी –जयसमंद झील, परंपरा, आधुनिकता, सांस्कृतिक विरासत, पर्यावरणीय प्रभाव, सतत विकास।

शोध प्रविधि– प्रस्तुत शोध पत्र वर्णात्मक और विश्लेष्णात्मक द्रष्टिकोण पर आधारित है। शोध सामग्री को प्रमुख इतिहास पुस्तको तथा ऐतिहासिक लेखन से लिया गया है स प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ो पर आधारित है।

शोध के उद्देश्य – प्रस्तुत शोध पत्र निम्न उद्देश्यो पर आधारित है :

1. जयसमंद झील के सांस्कृतिक पहलुओं की पहचान करना।
2. आधुनिक समय जयसमंद झील का सांस्कृतिक संरक्षण और चुनौतियाँ।

भारतवर्ष की संस्कृति अनेक रंगों, ध्वनियों और विविधताओं का संगम है। यहां की नदियाँ, पर्वत, वन और झीलें केवल भौगोलिक इकाइयाँ नहीं, अपितु सांस्कृतिक चेतना की वाहक भी रही हैं। राजस्थान के उदयपुर जिले में स्थित जयसमंद झील, जिसे एशिया की सबसे बड़ी कृत्रिम मीठे पानी की झीलों में गिना जाता है, न केवल एक अद्भुत जल संसाधन है, बल्कि यह मेवाड़ की सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक संरचना का अभिन्न अंग भी है। इसकी निर्मिति, परिवेश और प्रभाव ने सदियों से समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन, रीति–रिवाजों, परंपराओं, लोक–कथाओं और धार्मिक विश्वासों को गहराई से प्रभावित किया है।

जयसमंद झील न केवल भव्य जलाशय है, बल्कि यह मेवाड़ अंचल की सांस्कृतिक आत्मा है। युगों तक यह झील जनजातियों, ग्रामीणों, कस्बाई समाज और तीर्थयात्रियों के लिए श्रद्धा, परंपरा और जीविका का स्रोत रही है। परंतु वर्तमान समय में जिस गति से पर्यटन, नगरीकरण, तकनीकी विकास और सामाजिक बदलाव हुए हैं, उसी गति से सांस्कृतिक संरचना पर भी प्रभाव पड़ा है। यह प्रभाव कहीं संरक्षण की आवश्यकता बनकर उभरा है, तो कहीं चुनौतियों की गंभीरता लेकर।

इस खंड में हम देखेंगे कि जयसमंद झील से जुड़ी संस्कृति को आधुनिक समय में किन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, और उसे कैसे संरक्षित किया जा सकता है।

1. सांस्कृतिक विरासत पर आधुनिक प्रभाव – जयसमंद झील के चारों ओर जिस प्रकार होटल, रिसॉर्ट्स, जल क्रीड़ा केंद्र, पर्यटन वाहनों और व्यवसायों का विस्तार हुआ है, उसने लोक परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रभावित किया है:

1. कई स्थानों पर पारंपरिक पूजा स्थलों को आधुनिक ढंग से बदला गया, जिससे मूल भाव नष्ट हो रहा है।
2. जनजातीय नृत्य और गीत अब व्यावसायिक मंचन बनते जा रहे हैं – भावनात्मक गहराई के स्थान पर प्रदर्शनवाद हावी हो रहा है।
3. युवाओं में शहरीकरण और सोशल मीडिया का प्रभाव उन्हें अपनी परंपरा से दूर ले जा रहा है।

2. पर्यावरणीय संकट और सांस्कृतिक संकट का संबंध – जयसमंद झील के जलस्तर में गिरावट, प्रदूषण, और अवैध निर्माण केवल पर्यावरण के लिए नहीं, बल्कि संस्कृति के लिए भी खतरा हैं:

1. झील सूखने पर वहाँ होने वाले पवित्र स्नान, मेलों, पूजा स्थलों और धार्मिक अनुष्ठानों पर सीधा असर पड़ता है।
2. जब झील की जैव विविधता समाप्त होती है, तो संगीत, चित्रकला और लोक कथाएँ भी कंटेंट–विहीन हो जाती हैं।

अत: 'सांस्कृतिक संरक्षण केवल मन की बात नहीं, जल की रक्षा से शुरू होती है।'

3. स्थानीय परंपराओं में गिरती सहभागिता– पहले जहाँ ग्रामवासी, जनजाति, स्त्रियाँ और बालक–बालिकाएँ झील से जुड़े हर आयोजन में भाग लेते थे, अब:

1. अधिकांश युवा शहरों की ओर पलायन कर गए हैं।
2. आयोजनों में संख्या कम और सजावटीपन अधिक हो गया है।
3. बहुत सी पुरानी लोक विधाएँ अब केवल बुजुर्गों की याद में सीमित हैं।

यह गिरती सहभागिता सांस्कृतिक निरंतरता के लिए चुनौती है।

4. सांस्कृतिक व्यवसायीकरण बनाम वास्तविकता– पर्यटन ने जहाँ एक ओर स्थानीय कलाकारों को रोजगार दिया, वहीं दूसरी ओर:

1. कई स्थानों पर ष्मंचीय प्रस्तुतिष ने परंपरा की आत्मा को चोट पहुँचाई।
2. पर्यटक–प्रेरित बदलावों में असली लोकगीतों की जगह तात्कालिक मनोरंजन ने ले ली।

यानी अब संस्कृति संपर्क का नहीं, उत्पाद का रूप लेने लगी है।

5. संरक्षण हेतु प्रयास: सकारात्मक पहल – इन चुनौतियों के बीच कई सकारात्मक कदम भी उठाए गए हैं:

1. **स्थानीय स्वयंसेवी संगठन –** झील के किनारे 'झील मित्र समिति', 'जन संस्कृति मंच' जैसे समूहों ने सांस्कृतिक पुनर्जीवन का बीड़ा उठाया है। वे मेले, लोकगायन प्रतियोगिता, पारंपरिक व्यंजन उत्सव का आयोजन कर रहे हैं।
2. **शिक्षण संस्थानों की भूमिका –** विद्यालयों में झील पर आधारित पाठ्यक्रम, चित्रकला, निबंध लेखन और लोकसभा नाट्य करवाए जा रहे हैं।
3. **सरकारी योजना –** राजस्थान पर्यटन विभाग और पुरातत्व विभाग ने झील क्षेत्र के मंदिरों और सांस्कृतिक स्थलों के जीर्णोद्धार की योजनाएँ बनाई हैं।

6. डिजिटल मीडिया का उपयोग– आज के डिजिटल युग में सांस्कृतिक संरक्षण और प्रचार के नए माध्यम खुले हैं:

1. स्थानीय युवा झील पर डॉक्यूमेंट्री, शॉर्ट फिल्म्स और सोशल मीडिया अभियान चला रहे हैं।
2. फेसबुक पेज, यूट्यूब चौनल और इंस्टाग्राम अकाउंट्स के जरिए झील के गीत, रीतियाँ, फोटो और कहानियाँ साझा की जा रही हैं।

इससे संस्कृति नवीन पीढ़ी से जुड़ पा रही है।

7. महिला नेतृत्व और सांस्कृतिक पुनरुत्थान– जयसमंद क्षेत्र की स्त्रियाँ अब सांस्कृतिक संरक्षण की अग्रिम वाहक बन रही हैं:

1. वे हस्तशिल्प, पारंपरिक पाक कला, गीत–गायन और होमस्टे संस्कृति के जरिए झील संस्कृति को जीवंत बनाए हुए हैं।
2. कई स्वयं–सहायता समूह 'पानी री पायली', 'झील संगिनी' आदि के नाम से कार्य कर रहे हैं।

8. युवाओं को जोड़ना – प्राथमिक जरूरत– संस्कृति को जीवित रखने के लिए युवा पीढ़ी को प्रेरित करना सबसे जरूरी है:

1. उन्हें लोकगाथाओं, गीतों, संस्कारों और सांस्कृतिक आयोजनों में भागीदार बनाना होगा।
2. विद्यालयों और कॉलेजों में संस्कृति आधारित प्रोजेक्ट अनिवार्य करना चाहिए।
3. 'संस्कृति से गर्व' की भावना को पुनर्जीवित करना होगा।

9. सांस्कृतिक पर्यटन का सतत मॉडल– आवश्यक है कि जयसमंद झील के पर्यटन को केवल व्यापारिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक–संवेदनशीलता के साथ विकसित किया जाए:

1. पर्यटन गाइड को स्थानीय सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी होनी चाहिए।
2. आयोजनों में स्थानीय भाषा, पहनावा, संगीत और परंपराओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
3. झील के किनारे सांस्कृतिक केंद्र या ष्लोक संग्रहालयष की स्थापना की जानी चाहिए।

10. भविष्य की ओर दृष्टि – जयसमंद झील की संस्कृति केवल बीते समय की स्मृति नहीं, बल्कि भविष्य की प्रेरणा है। इसके संरक्षण हेतु:

1. सामूहिक चेतना,
2. प्रशासनिक सहयोग,
3. स्थानीय सहभागिता,
4. और शैक्षणिक नवाचार की जरूरत है।

यह झील जल और संस्कृति दोनों की मातृभूमि है – इसकी रक्षा में ही हमारी पहचान सुरक्षित है।

निष्कर्ष – जयसमंद झील की सांस्कृतिक विरासत धरोहर नहीं, धड़कन है। आधुनिकता की दौड़ में यह आवश्यक हो गया है कि हम अपने मूल्य, परंपराएँ और लोक चेतना को खोने न दें। सांस्कृतिक संरक्षण केवल अतीत की पूजा नहीं, भविष्य के निर्माण की प्रक्रिया है। यदि झील को उसके सांस्कृतिक स्वरूप में जीवित रखना है, तो जन भागीदारी, नवाचार और संवेदनशीलता को एकसाथ लाना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. **Sharma, Dasharatha.** *Early History of Mewar*. Rajasthan Oriental Research Institute, Udaipur.
2. **Somani, Ram Vallabh.** *History of Mewar from Earliest Times to 1751 A.D.*
3. **Gupta, R.K. & Bakshi, S.R.** *Studies in Indian History: Rajasthan through the Ages*.
4. **Mehta, Jodh Sinha.** *Mewar and the Mughal Emperors*.
5. **Paliwal, R.S.** *Traditional Water Management Systems in Rajasthan*.
6. **Hardgrove, Anne.** *Community and Public Culture: The Marwaris in Calcutta*. (for comparative traditional-modern transitions)

****